

क्रिया- क्रिया शब्द 'कृ' धातु से बना है, जिसका अर्थ होता है- 'करना'।

किसी कार्य के करने या होने का बोध कराने वाले शब्द क्रिया कहते हैं।

कामनाप्रसाद गुरु के अनुसार:- जिस विकारी शब्द के प्रयोग से हम किसी वस्तु के विषय में कुछ विधान करते हैं, उसे क्रिया कहते हैं- जैसे- मनीष पढ़ता है। मनीषा गाना गाती है।

बच्चे हँसते हैं। मध्याह्न पढ़ाता है। भइका सोता है।

**विशेष-** संस्कृत की मूलधातु के साथ 'ना' प्रत्यय का प्रयोग करने से क्रिया का निर्माण है -

**जैसे-** हँस + ना = हँसना, रो + ना = रोना, खा + ना = खाना,  
 चत + ना = चतना, लिख + ना = लिखना, गा + ना = गाना



# क्रिया को तीन भागों में बांटा जाता है -

(1) कर्म के आधार पर (2) प्रयोग/रचना के आधार पर (3) काल के आधार पर

(1) अकर्मक क्रिया (2) सकर्मक क्रिया

(i) पूर्ण अकर्मक क्रिया (ii) अपूर्ण अकर्मक क्रिया

(i) एककर्मक क्रिया (ii) द्विकर्मक क्रिया (iii) बहुकर्मक क्रिया

(i) सामान्य क्रिया

(ii) संयुक्त "

(iii) पूर्वकालिक "

(iv) प्रेरणार्थक "

(v) नामधातु "

(vi) कृदन्त "

(vii) समातीय "

(viii) सहायक "

① भूतकालिक क्रिया ② वर्तमान " ③ भविष्यत् "

(i) सामान्य भूत क्रिया

(ii) असन्न "

(iii) पूर्ण "

(iv) अपूर्ण "

(v) संदिग्ध "

(vi) हेतु हेतुमद् "

(i) सामान्य वर्तमान क्रिया

(ii) अपूर्ण "

(iii) संदिग्ध "

(iv) संभाव्य "

(v) आज्ञार्थक "

(i) सामान्य भविष्यत् क्रिया

(ii) संभाव्य "

(iii) आज्ञार्थक "

(iv) हेतु हेतुमद् "

① कर्म के आधार पर क्रिया:-

(1) अकर्मक क्रिया-

जब किसी वान्य में क्रिया के साथ कर्म प्रयुक्त न हो और क्रिया का प्रभाव वान्य में प्रयुक्त कर्ता पर पड़े, अकर्मक क्रिया कहलाती है -

जैसे- सीमा दोड़ती है। बच्चा रोता है। सोहन सोता है।  
हरीश बैठा है। कुन्ना भौंकता है। कोयल बूकती है।



अकर्मक क्रिया के दो उपभेद होते हैं -

(i) पूर्ण अकर्मक क्रिया - पूर्ण अकर्मक क्रिया में पूरक की आवश्यकता नहीं पड़ती अर्थात् बिना पूरक के ही पूर्ण अर्थ का बोध कराने के कारण पूर्ण अकर्मक क्रिया कहलाती है -

जैसे - विकास सौ रहा है। चिड़िया आकाश में उड़ रही है।  
वायुयान हवा में उड़ रहा है। लड़के मैदान में दौड़ रहे हैं।

## (ii) अपूर्ण अकर्मक क्रिया-

वे क्रियाएँ जो वाक्य में प्रयुक्त होकर अपना पूर्ण रूप से अर्थ व्यक्त नहीं कर पातीं अर्थात् इन्हें कर्म की तो आवश्यकता नहीं होती परन्तु पूरक की इन्हें आवश्यकता होती है, अपूर्ण अकर्मक क्रिया कहलाती है-

जैसे- आप बहुत चतुर निकले। वह आज स्वस्थ है।  
मेरा भाई बहुत चात्नाक है।